ISSN 2395-051X

बुंदेलखंड के सामाजिक लोकनृत्य

डॉ. अपर्णा चाचोंदिया
सहायक प्राध्यापक (नृत्य)
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय सागर (म.प्र)

सारांश -

म.प्र. का बुन्देलखण्ड अंचल लोक कलाओं एवं लोक संस्कृति के क्षेत्र में हमेशा से समृद्ध रहा है। 'लोक' शब्द का अर्थ होता है 'लोग' या 'जन'। जो कलायें जन सामान्य में प्रचलित होती हैं और उनका उद्देश्य भी लोकानुरंजन होता है, उन्हें लोक कलाओं की श्रेणी मे रखा गया है। बुन्देलखण्ड में प्रत्येक जाति, समुदाय आदि के नृत्य है, किन्तु कुछ ऐसे लोकनृत्य भी हैं जिन्हें समाज का हर वर्ग कर सकता है ऐसे लोकनृत्यों को सामाजिक लोकनृत्य कहा गया है। बुंदेलखण्ड में प्रचलित 'बधाई' एवं 'सैरा' लोकनृत्य सामाजिक लोकनृत्यों की श्रेणी में आते हैं।

मुख्य शब्द - लोकनृत्य, बधाई, सेरा, लोककला, डड़ला।

बुंदेलखंड अपने लोकनृत्यों की परंपरा में अत्यंत धनाढ्य है। जनसामान्य शास्त्रीय नियमों की कठोरता के कारण शास्त्रीय कलाओं को प्रधानता नहीं दे पाते थे और ऐसी परिस्थिति में लोगों ने पूजा-अर्चना, मनोरंजन में परंपराओं और रीतिरिवाजों में, मांगलिक अवसरों में, यात्रा में, अनुष्ठान में अपनी रूचि को सामान्य धारा में स्थापित करना शुरू कर दिया, जिसे लोक संगीत का नाम दिया गया। बुंदेलखंड अंचल में हर अवसर का लोकसंगीत उपलब्ध है। जन्म से लेकर मृत्यु तक का लोकसंगीत यहां प्रचलित है। संगीत की परिभाषा गायन, वादन एवं नृत्य तीनों कलाओं को समाहित करके ही सम्पूर्णता प्राप्त करती है। इस तरह लोकसंगीत में भी ये तीनों कलायें समाहित होतीं हैं।

बुंदेलखंड के निवासियों ने जब फसलों की कटाई, पूजा-अर्चना, त्योहार एवं मांगलिक अवसरों पर अपनी भावनाओं और आनंद की अभिव्यक्ति को अंग-संचालन के द्वारा प्रदर्शित करना प्रारंभ किया तब ये प्रदर्शनकारी कला लोकनृत्य के नाम से प्रचलित हुई। बुंदेलखंड में प्रागैतिहासिक काल के अनेक शैलचित्र विद्यमान हैं। इन शैलचित्रों में नर्तन कला के स्पष्ट दर्शन होते हैं। जैसे आबचंद की गुफाएं जिसमें सात लड़कियां पीठ किए कमर में हाथ डालकर नृत्य करते हुए दर्शाई गईं हैं। ऐसे ही अनेकों शैलचित्र जिन्हें हम नर्तन का आधार मान सकते हैं, प्रमाण के रूप में विद्यमान हैं।

यदि हम बुंदेलखंड के लोकनृत्यों के वर्गीकरण पर अपना ध्यान केन्द्रित करें तो हम पाते हैं कि इस अंचल में प्रत्येक वर्ग, जाति, धर्म, अवसर आदि के लोकनृत्य प्रचलित हैं। प्राचीन काल में प्रत्येक राजा को 16 कलाओं का ज्ञान होना आवश्यक था, जिसमें नृत्य का भी स्थान था।

बुंदेलखंडी लोकनृत्यों को इन तीन वर्गों में वर्गीकृत कर सकते हैं :-

1. जातिगत लोकनृत्य - ढिमरयाई, कानड़ा, बरेदी, मौनिया, राई नृत्य आदि।
2. सामाजिक लोकनृत्य - सैरा, बधाई आदि।
3. धार्मिक लोकनृत्य - जवारा, नौरता, शेर आदि।

बुंदेलखंड में सामाजिक लोकनृत्यों के अन्तर्गत मुख्य रूप से दो लोकनृत्यों को ही माना जा सकता है। सैरा लोकनृत्य और बधाई लोकनृत्य। सामाजिक लोकनृत्यों की यही विशेषता होती है कि इन लोकनृत्यों में समाज के किसी भी वर्ग का व्यक्ति भाग ले सकता है। इन दोनों सामाजिक नृत्यों की यथासंभव जानकारी एकत्रित करके प्रस्तुत करना ही इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य है। सैरा नृत्य जो कि बुंदेलखंड के पुरूष प्रधान लोकनृत्यों की श्रेणी में आता है, और बधाई लोकनृत्य जो कि महिला और पुरूष दोनों के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। ये दोनों ही सामाजिक लोकनृत्य हैं और मांगलिक अवसरों पर इन लोकनृत्यों के प्रदर्शन की परंपरा बुंदेलखंड क्षेत्र में प्रचलित है।

सैरा लोकनृत्य

सैरा बुंदेलखंड का सामाजिक सामूहिक लोकनृत्य है, जो कि यहां श्रावण और भाद्र पद में प्रदर्शित किया जाता है। यह पुरूष प्रधान लोकनृत्य है अर्थात इसमें केवल पुरूष ही भाग लेते हैं। बरसात के दिनों में फसल बोने के बाद किसानों को खेती का कोई विशेष काम नहीं होता अतः ये चौपालों पर, भगवान के मंदिर के आस-पास या किसी बड़े वृक्ष के नीचे सामूहिक रूप से इस नृत्य का प्रदर्शन करते हैं। सैरा नृत्य के साथ-साथ जो कुछ गाया जाता है, उसे सैरा गायन कहते हैं। सैरा गायन में अनेकों प्राचीन कथानक जुड़े होते हैं।

प्रत्येक नृत्यकार के हाथ में 2 से 2.5 फुट लंबी खैर या शीशम की लकड़ी होती है। इसे दाहिने हाथ में रखा जाता है। इस डंडे के अंतिम छोर पर घुंघरू बंधे होते हैं। इस लोकनृत्य की यह विशेषता होती है कि इसे एक ही डंडे से किया जाता है। सैरा नृत्य में ये डंडा दाहिने हाथ में लेकर बाजू वाले नर्तक के दाहिने हाथ के डंडे पर चोट की जाती है, और उसी डंडे को गोल घुमाते हुए नीचे लेकर दूसरी तरफ वाले नर्तक के डंडे पर आघात किया जाता है। ये डंडा घड़ी के कांटे के समान गोल-गोल घूमते हुए दाएं-बायें आघात करता है। यह नृत्य गोल मण्डलाकार किया जाता है। इस लोकनृत्य में नर्तकों की संख्या कितनी भी हो सकती है क्योंकि इसकी नृत्य संरचना में जोड़ी बनाकर नृत्य नहीं होता।

इस लोकनृत्य के आरंभ में ही लोकगीत की पंक्तियों द्वारा इस नृत्य को सावधानी पूर्वक करने की चेतावनी दे दी जाती है।

सैरो तो सैरो रे.... अरे सब कोउ कहे...
सैरो भली ने होय...
डड़ला चूके अरे बहियां लगे...
हो जा की पीरा घनेरी होय...

इस लोकनृत्य के लोकवाद्य संगत के रूप में नृत्य एवं लोकगीत अर्थात सैरा गायन के साथ-साथ बजते हैं। बांसुरी, टिमकी, ढोलक, मंजीरे, अलगोजा आदि लोकवाद्यों द्वारा इस लोकनृत्य की संगत की जाती है। इस लोकनृत्य के साथ चलने वाले लोकगायन में बुंदेलखंड के वीरों का वर्णन गाया जाता है। हां...हां रे..... की टेक पर सैरा गीत का गायन आरंभ किया जाता है। इस गायकी में सवाल जवाब चलते हैं। सैरा नृत्य के साथ चलने वाले लोकगायन की कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं :-

1. *बैठी तो रइयो रे.....*
   बैठी तो रइयो अरे रानी सतखंडा हो...
   खइयो डबों के पान
   जब हम आ हैं अरे रन जूझकें
   हो तोरी मोतियां भरा देहों मांग
2. *जरियो तो बरियो रे....*
   जरियो तो बरियो अरे रानी सतखंडा हो...
   तोरे पानों पे परे रे तुसार
   तोरे अकेले रे जियरा बिन
   हो सूनों लागे सकल संसार

इस नृत्य शैली के साथ ढोलक, नगड़िया, टिमकी, लोटा, चटकोरा, ढपला एवं बांसुरी आदि वाद्यों का संगत के रूप में प्रयोग किया जाता है।

इस सामाजिक लोकनृत्य में केवल पुरूष वर्ग ही भाग लेता है, इसलिए बुंदेलखंड में प्रचलित पुरूषों के पारंपरिक परिधान पर ही ध्यान केन्द्रित करेंगे। बुंदेलखंड के ग्रामीण अंचलों में पुरूष वर्ग घुटने तक सफेद रंग की धोती, कुर्ता, गले में तौलिया या दुपट्टे जैसा कपड़ा, बाएं हाथ में गमछा और दायें हाथ में डंडा लेते हैं, जिसे डढ़ा या डडला बोलते हैं। बुजुर्ग लोग साफा पहनते हैं। नृत्य करते समय पैरों में दो फलक के घुंघरू और हाथ में चूरा पहनते हैं। माथे पर सिंदूर से मधुकरशाही टीका लगाया जाता है। आंखों में काजल और कमर में दुपट्टा बांधते हैं।

बधाई लोकनृत्य

बधाई बुंदेलखंड का सामाजिक व मांगलिक लोकनृत्य है। इस लोकनृत्य को प्रत्येक आयु वर्ग के लोग करते हैं। पुरूष, स्त्री, बच्चे, बूढ़े और जवान सभी करते हैं। इस लोकनृत्य में जाति का भी कोई बंधन नहीं होता, हर जाति वर्ग के लोग इस लोकनृत्य को करते हैं। यह लोकनृत्य मांगलिक अवसरों पर, मुख्य रूप से किसी के जन्म पर, विवाहोत्सव एवं किसी मन्नत के पूरी हो जाने पर किया जाता है। कुछ जातियों जैसे ढीमर और मछुआ जाति में विवाह के अवसर पर देवर-भाभी के बीच बधाई नृत्य की प्रतियोगिता होती है। इस लोकनृत्य में जब साड़ी का पल्ला या आंचल सामने फैलाकर महिलाऐं नृत्य करती हैं तो ऐसा माना जाता है कि वे अपने से छोटे या अपने बच्चों के लिए

देवी-देवताओं से आशीर्वाद मांगने के भाव से नृत्य करतीं हैं। ऐसा माना जाता है कि जब कभी कोई विपत्ति आ जाती है, कोई बीमारी हो जाती है या ऐसा मानते हैं कि माता का प्रकोप हो गया है, या कोई मान्यता देवी-देवताओं के समक्ष रखते हैं तो वहां संकल्प लेते हैं कि यदि उनकी समस्या का निवारण हो जाता है या उनकी मान्यता पूर्ण हो जाती है तो शीतला माता के मंदिर के सामने बधाई नृत्य का प्रदर्शन करेंगे। इस तरह बधाई नृत्य के माध्यम से देवी-देवताओं को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पूजा-अर्चना एवं नृत्य करते हैं।

परंपरागत रूप से बधाई नृत्य मांगलिक अवसरों पर अपने परिवार या समाज के लोगों के साथ मिलकर किया जाता है। बुंदेलखंड की परंपरानुसार स्त्रियाँ मुंह पर घूंघट डालकर नृत्य करतीं हैं। इस नृत्य में पैर धरती से ऊपर नहीं उठाते, पैरों को घसीटते हुए नृत्य किया जाता है। घुटनों को मोड़कर जेड (Z) के आकार में झुका लेते हैं और कभी हाथों को जोड़कर या माथे से लगाकर विभिन्न प्रकार की मुद्राओं एवं कोमल अंग संचालन के साथ यह लोकनृत्य प्रदर्शित किया जाता है। इसमें दोनों पैर जुड़े रहते हैं। सिर झुकाकर दोनों हाथों से अपने पल्लू को पकड़कर उसे झुलाते हुए स्त्रियां नृत्य करतीं हैं। विभिन्न प्रकार से घूंघट को कलात्मक तरीके से पकडकर जब यह नृत्य किया जाता है तो बहुत ही मोहक लगता है। इस लोकनृत्य की यह विशेषता होती है कि इसमें अंगों का संचालन बहुत ही कलात्मक सौंदर्ययुक्त और कोमलतापूर्ण होता है। आजकल मंच पर जो बधाई नृत्य प्रस्तुत किया जाता है वह पारंपरिक बधाई लोकनृत्य से पर्याप्त अंतर रखता है। क्योंकि मंच पर नृत्य को आकर्षक एवं दर्शकों में रस की सृष्टि करने के उद्देश्य से इस लोकनृत्य में काफी प्रयोग किए गए हैं।

बधाई नृत्य की प्रस्तुति के लिए अलग से कोई वेशभूषा निर्धारित नहीं है। बुन्देलखंड अंचल में प्रचलित पारंपरिक वेशभूषा पहनकर ही इस नृत्य का प्रदर्शन किया जाता है। सुन्दर एवं चटक रंगों की वेशभूषा अधिक प्रयोग होती है। ग्रामीण स्त्रियां अधिकतर नौगजी साड़ी पहनतीं हैं जो कि छींट वाली या सादा रंगीन किनारी वाली होती है। वेशभूषा में प्रायः तीन रंगों का ज्यादा प्रचलन है, लाल, हरा और पीला। स्त्रियां ऊपर पोलका पहनतीं हैं जो कि प्रायः इन्हीं रंगों के होते हैं। साड़ी को कांछ लगाकर सीधे पल्ले में पहना जाता है। मुंह घूंघट से ढंका रहता है। यह पोलका फुग्गादार बांहों का होता है, जिसकी लम्बाई कमर तक होती है। पुरूष नर्तक धोती, कुर्ता, साफा, बंडी आदि पहनते हैं। स्त्रियां पारंपरिक आभूषण धारण करतीं हैं, पैरों में पायल, लच्छा, तोड़ल, बिछियां और पायजेब आदि। हाथों में कांच की चूड़ियां, ककना, वंगरी, चूरा, बांकें आदि। कमर में करधौनी, गले में तिदाना, टकार, हंसली, गटरमाला आदि। माथे पर बेंदी, झूला एवं नाक में पुंगरिया पहनतीं हैं। श्रृंगार में आंखों में काजल या सुरमा, माथे पर रोरी की बिन्दी, पैरों में माहुर लगातीं हैं। पुरूष माथे पर रोरी का टीका, गले में तबिजिया, हंसली तथा हाथों में चूरा पहनते हैं। इसके अतिरिक्त स्त्रियां व पुरूष बुंदेलखंड के पारंपरिक आभूषण धारण करते हैं।

बधाई नृत्य के साथ-साथ लोकगीत भी गाए जाते हैं जिसकी कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं :-

मोरी चंदा चकोर, चंदा चकोर...
नेहा लगायाई खोरन खोर
जागो रे भइया जा हो रई है भोर
चिरवा चिरैयें मचा रये हैं सोर

बधाई लोकनृत्य में बुंदेलखंड के पारंपरिक प्रचलित लोकवाद्य ही संगत के रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे रमतूला, ढोलक, ढपला, नगड़िया, लोटा, टिमकी इत्यादि।

लोककलाओं का हमारे जीवन में विशिष्ट स्थान है और लोकनृत्य तो मानव जीवन का उल्लास एवं सौंदर्य हैं, जो मानव के आनंद की अभिव्यक्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण साधन हैं। लोकनृत्य प्रत्येक अंचल की विशषताओं को प्रतिबिम्बित करते हुए उनकी संस्कृति का बोध कराते हैं। ग्रामीण और शहरी जीवन के मध्य एक गहरी खाई होती है और लोककलायें ग्रामीण जीवन में ही विशेष रूप से विद्यमान होतीं हैं अतः इन लोककलाओं को उक्त खाई पार करना दुष्कर कार्य है, क्योंकि पश्चिमी सभ्यता शहरी जीवन को बहुत सीमा तक प्रभावित किए हुए है। ऐसी परिस्थिति में लोककलाओं को सहजरूप से आत्मसात कर लेना सुगम नहीं है। आज आवश्यकता है ऐसे जागरूक समाज की जो इन लोककलाओं की ग्राम से शहर तक की यात्रा को सुगम मार्ग प्रदान करे।

संदर्भ -

इस शोधपत्र की विषय सामग्री का चयन लोककला गुरू स्व. श्री विष्णु पाठक (पूर्व विभागाध्यक्ष, एवं फाउंडर, प्रदर्शनकारी कला विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर) के साक्षात्कार एवं व्यक्तिगत क्षेत्रीय भ्रमण से प्राप्त जानकारी द्वारा किया गया है।

❖ ❖ ❖